श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

श्रीवण्शठकोप श्रीवीरराघव वेदान्त यतीन्द्र महादेशिकानां कृतिषु

॥ श्रीमदादिवण्शठवैरिगद्यम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. It is with reverence we acknowledge the help rendered by ***veda vāridhi* Sriman P. Ramanujan** of CDAC, Bangalore, who provided us with a clear text from an old and difficult-to-decipher document.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमदादिवण्शठवैरिगद्यम् ॥

श्रीश्रीनिवासयतिशेखरलब्धबोधं श्रीरङ्गनाथयतिवर्यपदाब्जभृङ्गम्।
श्रीवीरराघवमुनिश्रुतिमौलिसूरिश्रीनाथभक्तिभरिताशयमाश्रयामः॥

नमो वण्शठकोपाख्यगुरवे यतिभूभृते।
रामानुजार्यसिद्धान्तनिर्धारणपटीयसे॥

जय जय देशिक !

महादेशिक !

महायोगिधौरेय !

स्वामिन् निखिल हरिदन्त विख्यात !

श्रीमदादिवण्शठवैरि नामधेय !

परमपुरुषचरण नलिनैकान्तजनसुविधेय !

निखिलविबुध हृदयकमल सतताधेय !

दुर्विनीत कदर्थविषय वृत्ति कथकपरिषदसमाधेय !

अधिजिगमिषित मुक्तिपथ विबुधजन भागधेय !

अखिल जगदुदय विभव विलय नटन पटिम घटित निखिल निगम निचय शिखर परिषदनवरत निरत सतत विधुत दुरित विततति वितत सुकृत निकर सनकमुख निखिल मुनिजन हृदय कमल कुहर बिहरदमरवर हरिमुखसुर विनुत नरहरि चरण कमल युगळ परिचरण निरत !

अप्रतिम निज महिमगरिम समवलोकन समय समुदयदनवधिक भक्ति विवश मुनिजन पदनलिन विनति चटुल नरपरिबृढ विकट मकुट तटघटित मणिगण किरण निकर नीराजित !

अनुपम शम दम मुख प्रगुण गुणभूषण समलङ्कृत !

अविरत निजसंराधन समृद्धि समुत्कण्ठित हृदय सदकुण्ठ महिम वैकुण्ठ नृकण्ठीरव कण्ठोच्चारित प्रेषमनूच्चारण महिम समधिगत सकल संयमि सार्वभौम भाव समुद्भासित !

अपरिमित प्रमोद भरभरित हृदय सायं समय नटन प्रकट पाटन घटित मृडमकुटतट विलुठदुडु परिबृढ निस्सरदमृतरस परिष्वङ्ग विलसदति बहुळ हरिचरण तरङ्गिणी पयःपूर तरङ्ग सङ्ग डम्बर विडम्बक निज फणिति विराजित !

अनवरत दूरीकृत दुरित सूरिभवदनघ शारीरक निपुण सूरीडित चरण गौरीपति विभव दूरीकृति निपुण भेरी निनाद कर नारीजन विजय कारीक्षुचर मदहारीरित महित हारीतक शुकवचोरीति सरणि सुपारीण चटुल चकोरि शशिकर समूरिकृत वचन !

शीतोदक प्रसृमर वातोद्दलच्चरजल जातोद्गलिन् मधुरस जातोपम प्रतिकवि चेतोदर प्रदर सभूतोल्लसन् निजकविता तोषिताखिल नत भूतोर्जितावन परिभूतोन्मदासुरगण जातोत्कनज्जलनिधि जातोत्सु-काशय सुविनीतोक्लृप्ति रचन !

चिरकलित नानाविध दुरितपीनात्मक दुरभिमानालय विमल मानाद्य-खिलधनलूनानघ बुधवितानभिमत नयहीनार्थ गुणहीनानवरत विदूनागमशिख विमानाखिल मुनिविमानाकलन परजैनावळि कलित नानाविध कलह जिष्णो !

श्रीकामुक विमुख धीकाटव कलुष लोकायतिक मत कोकावलि सतत शोकाकलन विधि राका शशि सदृगनेकार्जित विधि पिनाकाधिप विनुति मूकायित विधुत नाकानुभव रुचि भेकानिश विनत लोका-शुभभिदलोकान्वित भगवदेकान्ति सुकृत विपाकायित जनन !

अनितर नृसामान्य महिमग सीमागम निपुण धीमानित निगम सामान्य परिनुत नामाभिलपन सुभूमाभियुत चित्त धामावलि सदृश धामान्वित जलधि जामातृ गुणनुति कामा विघटक

कौमारीमत वचोमानक कुमति भीमात्म मतिकृत वैमानिक महित धीमान शमन गति सोमानन सुभग !

भगवद् भाष्यकार संप्रदाय पदवी धुरन्धर चतुस्सप्तति पीठाधिप श्रीमद्वैष्णव भूभृन्मण्डल समभ्यर्चित निजाङ्घ्रि पङ्केरुह !

अखण्डल भूमण्डल कण्टक समुद्दण्ड पाषण्ड द्रुम षण्ड खण्डन प्रचण्ड त्रिदण्ड प्रकाण्ड कृत मण्डन निज भुजदण्ड !

निजनगर निबिड देवतान्तरनिलय संबाध सङ्कट प्रशमन परितोषित हृदय शठमथन मुनिपुङ्गव दत्त श्रीमन्नृसिंह मठाधिपत्य निर्वहण चिह्न हंसमुद्रा परिशोभित करकमल !

श्रीरङ्ग यदुगिरि कुरुकापुरी प्रमुख दिव्यस्थल प्रतिष्ठापित निगमान्तगुरु सन्निधि समवलोकन सञ्जात हर्ष निखिल श्रीवैष्णव भूभृन्मण्डल वितीर्ण भगवद्रामानुज संप्रदाय प्रतिष्ठापकाचार्य बिरुदावली समुद्भासित !

निज चरण नलिन संश्रित वैदिक सार्वभौम विद्वदग्रेसर विरचित स्मृति-रत्नाकर सुधीविलोचन दशनिर्णय प्रमुख धर्मशास्त्र विषय ग्रन्थजात मूलक नित्य नैमित्तिक काम्यकर्मानुष्ठेयत्व प्रकार विवेक लाभ जनित सन्तोष जलधि समज्जन सज्जन कलित नुति वचन मुखरित दशदिशावकाश !

निगम मकुट परिषदति निगूढार्थ तत्वप्रकाशन समुद्युक्त सन्ध्यावन्द-नभाष्य सत्सम्प्रदायसार भाष्योल्लास प्रमुख षष्टि प्रबन्ध निर्माण चतुर समुदग्र तपो महिम समधिगत निस्तुल प्रभाव दुष्प्रेक्ष निजरूप समुल्लसित श्रीमन्नारायण संयमि सार्वभौम परिचरित पदकमल !

कमल नयन चरण नलिन प्रपदन महिम प्रकटन प्रकट पाटव निखिल निगम सङ्कट प्रशमन पटु विशङ्कट धिषण वेङ्कटनाथ सार्वभौम प्रभृत्यनुमोदित भगवद् भाष्यकार परिगृहीत भगवच्छास्त्र चोदित विष्णु धर्मार्थ मठाधिपत्य साम्राज्य लक्ष्मी संलक्षित!

कन्या ज्येष्ठा भावित निजजन सन्तोषित सकल योगिजन !

अनवरत कलित निरतिशय श्रद्धाविशेष प्रकृष्टक संराधनप्रीत भगवन् नरहरि करुणा परिवाह लंभित निस्सीमोद्दाम वैभव !

अति कुहक बाह्य कथक कुल रंभावन निर्मथन गन्धसिन्धुर भगवद्रामानुज संयमि सार्वभौम विजयस्थान भूत यदुशिखरि शिखर शेखर भगवन्नारायण दिव्य मन्दिर परिष्कार भाव विलसदभ्रंकष विविध विचित्र दर्शनीय स्फाटिक प्रतिमोद्भासित गोपुर प्राकार निकर निर्माण प्रयास प्रहर्षित परमैकान्ति परिषदसकृदुप गीयमान निरुपम यशोविततिं मुक्तासर भूषित दिक्सुन्दरी मणिगण !

प्रभातसमयवत् भुवनजातोल्लासक !

प्रसूननिकरवत् भ्रमरहित !

प्रमाणस्वरूपवत् सदर्थसाधन भावविधुर !

प्रकाशवत् परमत मोह निवर्तक !

प्रयाजवत् शेष्युपकारभावलसित !

प्राणवत् स्वाधीनसर्वकरणक !

प्राणपादवत् इन्द्रियग्राम वैभव निरसक !

प्रकरणवत् स्वसान्निध्यव्यक्त दिक्प्राबल्यक !

व्याकरणाधिकरणवत् साधुशब्द प्रामाण्य प्रसाधनपर !

व्याकरणवत् नानादेश पुरुष प्रत्यय कारकाख्यात नामगुणक !

टकाराद्यनुबन्धवदागम भावव्यञ्जक !

अनेकाल्वत् सर्वदेश भावावह !

न्यायशास्त्रवत् भूयोदर्शन व्याप्त्युपाधिवादशोभित !

व्याप्तिवादवत् साकल्य लक्षण विराजित !

मीमांसा शास्त्रवत् अपूर्वार्थसाधन निपुण !

प्रोक्षण्यधिकरणवत् प्रकटित योगोत्कर्ष !

शारीरक शास्त्रवत् उपनिषत् अभिमतार्थ प्रतिपादन धुर्वह !

जन्माद्यधिकरणवत् ब्रह्मलक्षण विचार तत्पर !

महाभारतवत् प्रथित धर्मजात वैभव !

रामायणवत् प्रपञ्चित भूतनयाशय !

भागवतवत् अक्रूर वचनोत्कर्ष शोभित !

विष्णुपुराणवत् विनत प्रह्लाद जनक दान प्रकाशक !

उत्तम पुरुष लोचनवत् श्रुत्यन्त विश्रान्त !

चतुर्मुखवत् अनवरत सत्यासक्त !

यक्षाध्यक्षवत् प्रकटित सर्वज्ञ भाव !

महेन्द्रवत् विपुलामर हितप्रवृत्त !

कुहना मत्स्यवत् निखिलनिगमनानायासशोभित !

कूर्मवत् मन्दरागधर !

महावराहवत् संश्रित विपुलानन्दकारक !

मायामृगेन्द्रवत् संश्रितप्रह्लादक !

वञ्चनावटुवत् प्रथित रसाभिलाष !

भार्गववत् विपुलाधि पापहति दक्ष !

दाशरथिवत् प्रबल भूतदयानुकम्प !

हलधरवत् हलपराजित परमहिमक !

मायागोपवत् विहित धर्मजातादर !

कल्किवत् कलि गति भङ्ग कारक !

वकुळभूषण मुनिपुङ्गववत् परम हितकारि भावोल्लासित भगवत् भाष्यकारवत् लक्ष्मणार्य भावावह !

त्रय्यन्तगुरुवत् अनन्तसूरि प्रमोद जनक !

द्विजराज भावोल्लसितत्वेऽपि भुवनजातोल्लासक !

लोकबन्धुत्वेऽपि सदनुकूलस्वभाव !

अनलाभिख्यत्वेऽपि सदाक्षय संवर्धक !

कवित्वेऽपि गुर्वादरणान्वित !

विनतानन्दनत्वेऽपि समुल्लासिताहीनकुल !

क्षमाभृत्त्वेऽपि विपुलाशारहित !

अचलस्वभावत्वेऽपि सदागति कुतूहल !

बहुशाखाधिगम शोभितत्वेऽपि पल्लवाश्लेष विधुर !

सुमनस्त्वेऽपि विधुत मधुप सङ्ग !

सर्वज्ञत्वेऽपि भवप्रत्यर्थिभूत !

विबुधाध्यक्षत्वेऽपि सपक्षीकृत क्षमाभृद्वर्ग !

उदय शिखरि शिखर शेखर तरणि किरण परिष्वङ्ग विकसदति मृदुळ नळिन सदृश निज चरण युगळ लसित !

विनत जन सङ्घालघु दुरित सङ्घात धुति सृति जङ्घाल सुलळित जङ्घायुग लसित !

किंशुक कुसुम रुचिजाल रुचिर काषाय चेलवर विराजित कटितट !

अनघ मुनिजन प्रशंसनीय दर्शनीय महनीय तुळसी नळिनाक्ष माला परिशोभित वक्षःस्थल !

भगवत् पराशर पाराशर्य प्रमुख महर्षिकुल संप्रदायपथ बाधावह कुमति गणबन्धन सूत्रायित यज्ञोपवीत परिशोभित !

त्रयीधर्म विलोपक काणादशाक्य पाषण्ड दण्डनोचित काण्डायित त्रिदण्ड मण्डित श्रुति विततिं पर्युपघ्नायित निज भुज दण्ड !

कुन्द कोक बृन्द सदृश मन्दहास सङ्ग रुचिर दर्शनीय दन्त विततिं सुन्दर !

शारद तुहिनकर सदृश निजवदन विलसत् ऊर्ध्वपुण्ड्र मण्डित निज निटालक !

अनवरत कलित कोमल चारु शिखाबन्ध समुद्भासित !

निजजन रुडुवर वास भासुरवर भारूप निजनिकट समुपगत शठमथन मुनिप्रवर विमलतर हृदय विवश वशीकरण चण निखिल

जगन्मोहन चतुर निरतिशय निजविग्रह सौन्दर्य समुल्लसित भगवत् अपर्याप्तामृत निरवधिक कटाक्ष समुज्जृम्भित निष्प्रतिम महिमा महाश्रव !

अतिसरळ सरळ वकुळ मुकुळ परिमिळदनिल तरळ नळिन कुवलय वलय गळदधिक मधुर मधुरस मदहरण निपुण राघव सुमनोवर कलित नुतिवचन चातुरी रञ्जित हृदय !

निज विरचित ग्रन्थ जात प्रवर्तन सन्तोषित निगमान्तदेशिक !

अनवरत शुश्रूषित केशव देशिक !

अखिल हेयगुण वैदेशिक !

श्रीमदादिवण् शठारि महादेशिक नमस्ते नमस्ते नमस्ते !

हृद्यं गुणाढ्यमिह वण्शठवैरिगद्यं स्वाद्यं सदा सुमनसां कुहकैरभेद्यम्।
वात्स्येन राघव सुधीमणिना प्रक्लृप्तं सन्तो निशम्य हृदये सदने दधीरन्॥

श्रीवासयोगिवरदेशिकसत्कटाक्षात् श्रीरङ्गनाथ यतिवर्यगुरोः कटाक्षात्।
प्रोक्तं मया विमल वण् शठवैरिगद्यं क्षेमं वहत्वनुदिनं पठतां जनानाम्॥

॥ इति श्रीमद् अहोबिल लक्ष्मीनृसिंह महामठ दिव्यास्थान सप्तविंश पट्ट मूर्धाभिषिक्तानां श्रीमद् वेदमार्गेत्यादि बिरुदाङ्कितानां श्रीवण् शठकोप श्रीसर्वतन्त्र कविकण्ठीरव वीरराघव वेदान्त यतीन्द्र महादेशिकानां कृतिषु श्रीमदादिवण्शठवैरिगद्यं संपूर्णम् ॥